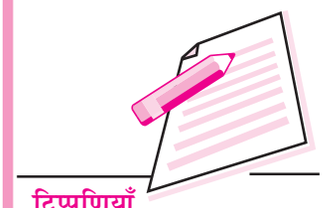

24

राष्ट्रीय आय और संबंधित समग्र

अर्थव्यवस्था का मुख्य ध्येय जनता की आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए वस्तुएं और सेवाएं उपलब्ध कराना है। अर्थव्यवस्था इस ध्येय की सिद्धि उत्पादन प्रणाली के संचालन से करती है। इसी से वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है। उत्पादन प्रक्रिया से ही अर्थव्यवस्था में आय का सृजन होता है।

प्राय: आप सभी ने राष्ट्रीय आय के बारे में अवश्य कुछ-न-कुछ सुना एवं पढ़ा होगा। इसमें दो शब्दों की युक्ति है—राष्ट्रीय और आय। इन प्रत्येक शब्दों का अर्थशास्त्र में विशिष्ट अर्थ है। इस पाठ में आप आय, राष्ट्रीय आय और राष्ट्रीय आय की कुछ मूल अवधारणाओं का अर्थ पढ़ेंगे। इन अवधारणाओं के जाने बिना, राष्ट्रीय आय का अर्थ एवं राष्ट्रीय आय का मापन करना अति कठिन है।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप:

- साधन और गैर-साधन आय में भेद कर पाएंगे;
- आय के चक्रीय प्रवाह को समझ पाएंगे;
- मूल आर्थिक क्रियाओं के बारे में जान पाएंगे;
- बंद और खुली अर्थव्यवस्था के बीच अंतर कर पाएंगे;
- स्टॉक एवं प्रवाह की अवधारणा को समझ पाएंगे;
- देश की घरेलू सीमा और देश के सामान्य निवासी की अवधारणा को समझ पाएंगे;
- मध्यवर्ती उत्पाद और अंतिम उत्पाद, उत्पाद का मूल्य और मूल्य वृद्धि, मूल्य वृद्धि के सकल और शुद्ध उपाय में अंतर कर पाएंगे;

टिप्पणियाँ

- विभिन्न प्रकार की साधन आयों की व्याख्या कर पाएंगे;
- घरेलू उत्पाद और राष्ट्रीय उत्पाद की अवधारणाओं को समझ पाएंगे;
- मौद्रिक और वास्तविक GDP की अवधारणाओं की व्याख्या कर पाएंगे; तथा
- बाजार कीमत और साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद, विशुद्ध घरेलू उत्पाद, सकल राष्ट्रीय उत्पाद और विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद की अवधारणाओं को समझ पाएंगे।

24.1 आय का अर्थ

अर्थव्यवस्था में हमें विभिन्न प्रकार की आय प्राप्त होती है। रोजगार दाताओं से हमें मजदूरी और वेतन मिलते हैं। रुपये उधार देने पर हम ब्याज पाते हैं तो कई बार बदले में कुछ भी बिना दिए हमें उपहार, दान आदि भी मिल जाते है। इन सभी प्राप्तियों को हम दो वर्गों में बांट सकते हैं–

(क) साधन आय,

(ख) गैर-साधन आय।

(क) साधन आय

उत्पादन के साधन द्वारा साधन स्वामी को अपने साधन की सेवाएं, उत्पादक इकाइयों में सुलभ कराने के बदले में मिली राशि को साधन आय कहा जाता है। हम यह जानते हैं कि उत्पादन, अपने चारों कारकों का संयुक्त परिणाम होता है। उत्पादन के ये चार कारक इस प्रकार हैं:

(i) श्रम

श्रम में वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए प्रयुक्त सभी शारीरिक और मानसिक प्रयासों को सम्मिलित किया जाता है। ये शारीरिक और मानसिक प्रयास अविभाज्य हैं। एक श्रमिक को दोनों की आवश्यकता होती है। कुछ व्यवसायों में शारीरिक श्रम की मानसिक श्रम की तुलना में अधिक आवश्यकता होती है और कुछ व्यवसायों में मानसिक श्रम की शारीरिक श्रम की तुलना में अधिक आवश्यकता होती है।

(ii) भूमि

अर्थशास्त्र में भूमि से अभिप्राय उन सभी से है, जो हमें प्रकृति द्वारा नि:शुल्क धरातल पर धरातल के नीचे और ऊपर प्राप्त हैं। धरातल पर इसके अंतर्गत मिट्टी का धरातल क्षेत्र, जल, वन आदि सम्मिलित होते हैं और धरातल के नीचे जमा खनिज, जल धाराएं, पैट्रोलियम आदि सम्मिलित हैं और धरातल के ऊपर इसके अंतर्गत सूर्य की रोशनी, हवा आदि सम्मिलित होते हैं। जैसे ही भूमि दुर्लभ हो गई, इसकी खरीद और बिक्री आरंभ हो गई। जो भूमि के स्वामी थे उन्होंने इसकी कीमत वसूलना प्रारंभ कर दिया। भू-स्वामी को इस प्रकार के भुगतान को लगान के रूप में जाना गया है।

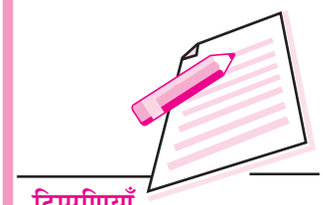

(iii) पूंजी

पूंजी के अंतर्गत वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए प्रयुक्त सभी मानव निर्मित संसाधनों को सम्मिलित किया जाता है, जैसे–भूमि पर ढांचा, मशीन, उपस्कर, वाहन, सामग्री का भंडार आदि। पूंजी के उपयोग के लिए पूंजीपति को दिया गया भुगतान ब्याज के रूप में जाना गया है।

(iv) उद्यमी

इससे तात्पर्य एक व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह द्वारा एक व्यवसाय को आरंभ और संगठित करने के लिए किए गए प्रयास से है। जब तक कोई ऐसे प्रयास नहीं करता है तब तक कोई व्यवसाय आरंभ नहीं हो सकता है। जो ऐसे प्रयास करता है, उसे उद्यमी के रूप में जाना गया है। उद्यमी को मिलने वाली आय को लाभ कहा जाता है।

इस प्रकार, कर्मचारियों का पारिश्रमिक, लगान, ब्याज और लाभ को साधन स्वामियों की 'साधन आय' कहा जाता है।

(ख) गैर-साधन आय

जिन मौद्रिक प्राप्तियों के लिए प्राप्तकर्ताओं को त्याग/प्रतिदान नहीं करना पड़ता, उन्हें हम गैर-साधन आय कहते हैं। इनके मुख्य उदाहरण उपहार, दान, धर्मार्थ, कर, दंड आदि हैं। इन्हें पाने में किसी प्रकार की उत्पादक गतिविधि नहीं होती। इन आमदनियों को हस्तांतरण आय कहा जाता है, क्योंकि ये बिना किसी सेवा या वस्तु दिए ही प्राप्त होने वाले एक तरफा मौद्रिक भुगतान हैं। राष्ट्रीय आय में इस प्रकार की प्राप्तियां सम्मिलित नहीं की जाती।

24.2 आधारभूत आर्थिक गतिविधियां

उत्पादन, उपभोग और निवेश–तीन मूलभूत आर्थिक गतिविधियां हैं। ये प्रत्येक अर्थव्यवस्था में होती हैं।

(क) उत्पादन

किसी वर्तमान चीज के मूल्यमान में वृद्धि ही उत्पादन है। उत्पादन प्रक्रिया में वर्तमान चीजों को अधिक मूल्यवान वस्तुओं में परिवर्तित करने के लिए उत्पादन के कारकों का संयुक्त प्रयास उपयोग में लाया जाता है। मूल्य की यही वृद्धि उत्पादन कहलाती है। उदाहरण के लिए, एक बढ़ई ने 1000/- रुपये की लकड़ी खरीदी, उसका फर्नीचर बनाया और 2000/- रुपये में बेच दिया। यहां उत्पादन प्रक्रिया में मूल्य वृद्धि 1000 रुपये (2000 रुपये – 1000 रुपये) रही है।

(ख) उपभोग

व्यक्तिगत और लोगों की सामूहिक आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष तुष्टि के लिए उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का उपयोग ही उपभोग कहलाता है। इसमें परिवारों द्वारा खरीदी गई सभी वस्तुएं,

जैसे–खाद्य पदार्थ, वस्त्र, जूते आदि सम्मिलित होते हैं और सरकार द्वारा सामूहिक उपभोग को पूरा करने के लिए, जैसे–सड़कों, पुलों, स्कूल आदि के निर्माण पर खर्च को सम्मिलित किया जाता है।

(ग) निवेश/पूंजी निर्माण

उत्पादन का वह अंश, जो उपभोग से बच जाता है और आगे उत्पादन में सहायक होता है, जैसे–मशीनों, औजारों, सामग्री-संग्रह आदि के रूप में भौतिक परिसंपत्तियां आदि है, उसे निवेश कहते हैं। इससे अर्थव्यवस्था की भावी उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है।

तीनों आर्थिक गतिविधियां परस्पर संबंधित और निर्भर होती हैं। उत्पादन में वृद्धि, उपभोग और निवेश दोनों में वृद्धि करती है। उपभोग में वृद्धि उत्पादकों को भविष्य में अधिक उत्पादन के लिए प्रेरणा देती है। निवेश में वृद्धि भविष्य में एक देश की उत्पादन क्षमता में वृद्धि करती है, जो पुनः उत्पादन और निवेश दोनों में वृद्धि करती है। बिना उत्पादन हुए तो उपभोग और निवेश भी नहीं हो पाएंगे। यही तीन गतिविधियां अर्थव्यवस्था में आय के प्रवाहों का सृजन करती हैं।

24.3 बंद अर्थव्यवस्था बनाम खुली अर्थव्यवस्था

आधुनिक युग में तो प्रायः सभी देशों के अन्य देशों से आर्थिक लेन-देन के संबंध होते हैं। प्रायः सभी दूसरे देशों से कुछ-न-कुछ वस्तुओं और सेवाओं की खरीदारी करते हैं। विभिन्न देशों के बीच उधार का लेन-देन भी चलता है। पर्यटक के रूप में एक देश के नागरिक दूसरे देश में जाते हैं। यदि दो देशों के बीच आर्थिक संबंध हैं तो उनके बीच वास्तविक और मौद्रिक प्रवाह भी अवश्य होते हैं।

खुली अर्थव्यवस्था एक ऐसा पद है, जिसे एक देश के लिए प्रयुक्त किया जाता है, जिसके शेष विश्व से आर्थिक संबंध हो। इस दृष्टि से आज विश्व के अधिकांश देश खुली अर्थव्यवस्थाएं हैं। जिन देशों के शेष विश्व से कोई आर्थिक लेन-देन नहीं होते, उन्हें हम बंद अर्थव्यवस्थाएं कहते हैं। आज के विश्व में ऐसे किसी देश का होना बहुत कठिन है।

24.4 स्टॉक (भंडार) और प्रवाह

राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाने में स्टॉक और प्रवाह के बीच भेद करना बहुत आवश्यक है।

स्टॉक : स्टॉक एक मात्रा है, जिसे एक विशेष समय बिंदु पर मापा जाता है। जैसे 31 मार्च को सायं चार बजे आदि, जनसंख्या, मुद्रा की आपूर्ति आदि स्टॉक के विचार से जुड़ी अवधारणाएं हैं। इनका कोई समय-आयाम नहीं होता।

प्रवाह : प्रवाह एक मात्रा है जिसे एक निश्चित अवधि के अनुसार मापा जाता है। ये अवधि दिन, मास, वर्ष आदि हो सकती है। इसका समय आयाम होता है। राष्ट्रीय आय, जनसंख्या वृद्धि एक प्रवाह की अवधारणाएं है।

24.5 आय का चक्रीय प्रवाह

उत्पादन, उपभोग और निवेश अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण गतिविधियां हैं। इन्हीं के संचालन में अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रकों के बीच लोगों के लेन-देन होते हैं। इन लेन-देनों में आय और व्यय के प्रवाह का चक्रीय स्वरूप हो जाता है। इन्हीं को आय का चक्रीय प्रवाह कहा जाता है। यह दो सिद्धांतों पर आधारित है।

(i) क्रेता का व्यय विक्रेता की आय बन जाता है और

(ii) वस्तुएं और सेवाएं विक्रेता से क्रेता की ओर प्रवाहित होती हैं। इनके लिए मौद्रिक भुगतान विपरीत दिशा में अर्थात् क्रेता से विक्रेता की ओर प्रवाहित होता है। इस प्रकार वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह (वास्तविक प्रवाह) एक दिशा में होते हैं तो दूसरी ओर मौद्रिक भुगतान के रूप में प्रवाह (मौद्रिक प्रवाह) होते हैं। ये एक साथ मिलकर चक्रीय प्रवाह कहलाते हैं।

वास्तविक प्रवाह : भूमि, श्रम, पूंजी और उद्यम के स्वामी के रूप में परिवार अपनी साधन सेवाएं फर्मों को प्रदान करते हैं। ये फर्में परिवारों की मांग पूरी करने के लिए वस्तुओं, सेवाओं आदि का निर्माण करती हैं। इस प्रकार, परिवारों से फर्मों को साधन सेवाओं और फर्मों से परिवारों को उपभोक्ता वस्तुओं एवं सेवाओं के प्रवाह ही, वास्तविक प्रवाह कहलाते हैं।

मौद्रिक प्रवाह : आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं में वस्तुओं और सेवाओं तथा साधन सेवाओं का मूल्यांकन मुद्रा की इकाइयों में किया जाता है। परिवारों को भूमि के लिए लगान, श्रम के लिए मजदूरी, पूंजी पर ब्याज और उद्यम की सेवा के लिए फर्मों से लाभ प्राप्त होता है। ये फर्मों से मिली वस्तुओं और सेवाओं के दाम उन्हें चुकाते हैं। फर्मों और परिवारों के बीच यह मुद्रा का लेना-देना ही मौद्रिक प्रवाह है।

चक्रीय प्रवाहों को हम निम्न चित्र द्वारा देख सकते हैं–

दो क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में चक्रीय प्रवाह (यहां बचत नहीं हो रही)

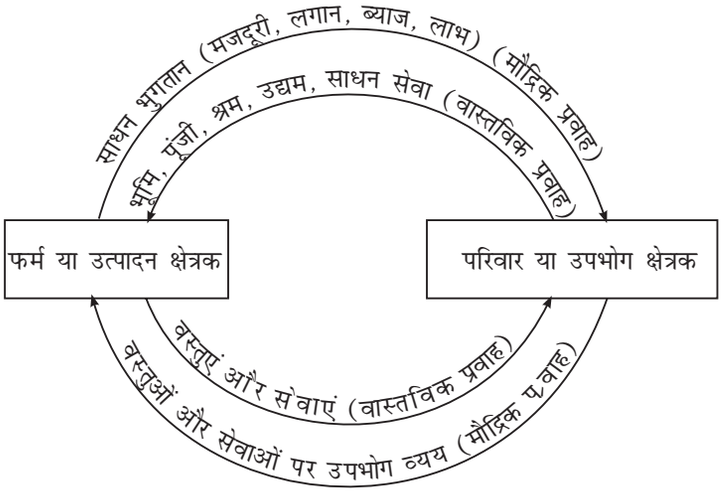

चित्र 24.1

अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्र और उनसे प्राप्त प्रवाह तथा उनके द्वारा प्रदान प्रवाह

खुली अर्थव्यवस्था को निम्नलिखित पांच क्षेत्रकों में विभाजित किया जा सकता है–

(i) उत्पादक क्षेत्रक;

(ii) परिवार क्षेत्रक;

(iii) सरकार क्षेत्रक;

(iv) वित्त क्षेत्रक;

(v) शेष विश्व क्षेत्रक।

इन क्षेत्रकों के बीच आय के प्रवाहों को हम एक प्रवाह चित्र द्वारा स्पष्ट कर रहे हैं–

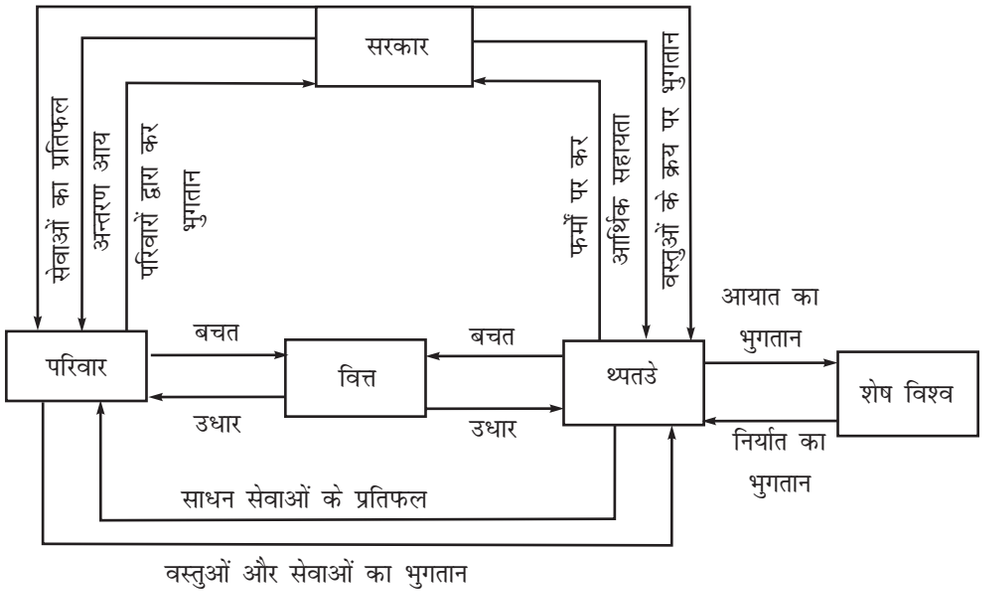

चित्र 24.2

1. उत्पादक इकाइयों से और उत्पादन इकाइयों को प्रवाह

   (क) परिवारों से साधन सेवाओं की खरीदारी (वास्तविक अंतर प्रवाह)। बदले में उन्हें मजदूरी, ब्याज, लगान, लाभ के रूप में प्रतिफलों का भुगतान (मौद्रिक बाह्य प्रवाह)।

   (ख) वित्त क्षेत्रक में बचतें जमा करना (मौद्रिक बाह्य प्रवाह)।

   (ग) शेष विश्व से वस्तुओं और सेवाओं का आयात (वास्तविक अंतर प्रवाह)। इसके बदले में भुगतान (मौद्रिक बाह्य प्रवाह)।

   (घ) वस्तुओं-सेवाओं का निर्यात (वास्तविक बाह्य प्रवाह), निर्यात मूल्य की प्राप्ति (मौद्रिक बाह्य प्रवाह)।

   (ङ) सरकार को करों का भुगतान (मौद्रिक बाह्य प्रवाह)।

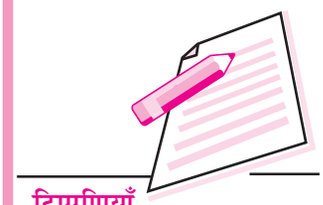

(च) परिवारों व सरकार को वस्तुओं और सेवाओं की बिक्री (वास्तविक बाह्य प्रवाह) बदले में परिवारों से निजी उपभोग व्यय और सरकार से सार्वजनिक उपभोग व्यय की राशियों की प्राप्ति (मौद्रिक अंतर प्रवाह)।

(छ) वे सरकार से आर्थिक सहायता प्राप्त करते हैं (मौद्रिक अंतर प्रवाह)।

(ज) वे वित्त क्षेत्र से उधार लेते हैं (मौद्रिक अंतर प्रवाह)।

2. परिवारों से और परिवारों को प्रवाह

(क) फर्मों/उत्पादक इकाइयों से वस्तुओं और सेवाओं की खरीदारी (वास्तविक अंतर प्रवाह)। बदले में उपभोग व्यय के रूप में उनकी कीमत चुकाना (मौद्रिक बाह्य प्रवाह)।

(ख) सरकार को वैयक्तिक करों का भुगतान (मौद्रिक बाह्य प्रवाह)।

(ग) वित्त क्षेत्र में बचतें जमा करना (मौद्रिक बाह्य प्रवाह)।

(घ) उत्पादन क्षेत्र को साधन सेवाओं की बिक्री (वास्तविक प्रवाह)। बदले में साधन आय की प्राप्ति (मौद्रिक अंतर प्रवाह)।

(ङ) सरकार से नि:शुल्क सेवाओं की प्राप्ति (वास्तविक अंतर प्रवाह) तथा अंतरण आय की प्राप्ति (मौद्रिक अंतर प्रवाह)।

3. सरकार से और सरकार को प्रवाह

(क) उत्पादकों से वस्तुओं और सेवाओं की खरीद (वास्तविक अंतर प्रवाह)। बदले में उनकी कीमत का सार्वजनिक उपभोग व्यय के रूप में भुगतान (मौद्रिक बाह्य प्रवाह)।

(ख) उत्पादकों को आर्थिक सहायता प्रदान करना (मौद्रिक बाह्य प्रवाह)।

(ग) परिवारों को नि:शुल्क सेवाएं (वास्तविक बाध्य प्रवाह) तथा हस्तांतरण भुगतान (मौद्रिक बाह्य प्रवाह)।

(घ) वित्त क्षेत्र में बचत जमा करना (मौद्रिक बाह्य प्रवाह)।

(ङ) उत्पादकों से करों की प्राप्ति (मौद्रिक अंतर प्रवाह)।

(च) परिवारों से वैयक्तिक करों की प्राप्ति (मौद्रिक अंतर प्रवाह)।

4. वित्तीय क्षेत्र से और वित्तीय क्षेत्र को प्रवाह

(क) उत्पादकों को पूंजी उधार देना (मौद्रिक बाह्य प्रवाह)।

(ख) परिवारों, उत्पादकों और सरकार की बचतें जमा करना (मौद्रिक अंतर प्रवाह)।

5. शेष विश्व से और शेष विश्व को प्रवाह

(क) शेष विश्व से वस्तुओं और सेवाओं का आयात (वास्तविक अंतर प्रवाह) और इन आयातों की कीमत का भुगतान (मौद्रिक बाह्य प्रवाह)।

(ख) शेष विश्व को वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात (वास्तविक बाह्य प्रवाह) और उनकी कीमत के भुगतान की प्राप्ति (मौद्रिक अंतर प्रवाह)।

ये सभी प्रवाह राष्ट्रीय आय के सृजन को प्रभावित नहीं करते। इनमें से कुछ गैर-साधन हस्तांतरण आय मात्र हैं और उनका राष्ट्रीय आय पर कोई प्रभाव नहीं होता। पाठ 25 के अध्ययन के बाद इन दोनों प्रवाहों के बीच अंतर का महत्व और अधिक स्पष्ट होगा।

पाठगत प्रश्न 24.1

1. आय के चार साधनों का नाम दीजिए।
2. हस्तांतरण भुगतान क्या होता है?
3. बंद अर्थव्यवस्था क्या है?
4. स्टॉक और प्रवाह प्रत्येक के दो उदाहरण दीजिए।

24.6 राष्ट्रीय आय से जुड़ी अवधारणाएं

राष्ट्रीय आय का अर्थ जानने के लिए इससे जुड़ी कुछ आधारभूत अवधारणाओं और योगों को समझना आवश्यक होता है। ये अवधारणाएं हैं–

24.7 घरेलू क्षेत्र

घरेलू क्षेत्र (आर्थिक क्षेत्र) की अवधारणा देश की भौगोलिक अथवा राजनीतिक सीमाओं के विचार से अलग होती है। एक देश के घरेलू क्षेत्र में निम्न सम्मिलित हैं–

(i) देश की राजनीतिक सीमाएं-सीमांतर्गत जल क्षेत्रों सहित।

(ii) देश के सामान्य नागरिकों द्वारा दो या दो से अधिक देशों के बीच संचालित जलयान एवं वायुयान। उदाहरणत: विभिन्न देशों के बीच उड़ान भरते एयर इंडिया के वायुयान।

(iii) मछुआरों के जहाज, तेल-गैस, अन्वेषण एवं उत्पादन हेतु महासागरों में खुदाई करने के लिए लगाए गए यंत्रादि। ये अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं में या जहां हमारे देश को एकाधिकार प्राप्त हो, वहां काम करते हैं और इनका संचालन हमारे देश के सामान्य नागरिक करते हैं।

(iv) अन्य देशों में स्थित हमारे दूतावास, वाणिज्य दूतावास और सैन्य शिविर आदि। जैसे–अमेरिका, जापान आदि में भारतीय दूतावास, किंतु भारत में स्थित अन्य देशों के दूतावास आदि भारत की भौगोलिक सीमा में होते हुए भी आर्थिक दृष्टि से भारत के आंतरिक क्षेत्र का हिस्सा नहीं मान जाएंगे।

अत: देश के घरेलू क्षेत्र को हम राजनीतिक क्षेत्र, क्षेत्रीय महासागर, जल एवं वायुयान, मछुआरे नौकादि, अन्य देशों में राजदूतावास एवं वाणिज्य दूतावास आदि के समूह के रूप में परिभाषित करते हैं।

24.8 सामान्य निवासी

सामान्य निवासी शब्द भी देश के नागरिकों से अलग अवधारणा है। किसी देश के सामान्य निवासी वे होते हैं, जो आमतौर पर उस देश में रहते हें और जिनके आर्थिक हित उसी देश से जुड़े होते हैं। भारत के सामान्य निवासियों में भारत के नागरिकों के साथ-साथ वे विदेशी भी सम्मिलित होंगे, जो यहां रहकर अपनी आजीविका कमाते हैं। उदाहरण के लिए, भारत में एक वर्ष से अधिक समय से रह रहे नेपाली नागरिक, जो यहां उत्पादन, उपभोग, निवेश आदि आर्थिक गतिविधियों में संलग्न हैं, भारत के सामान्य निवासी माने जाएंगे।

इसके विपरीत अन्य देशों जैसे (यू.एस.ए. आदि) एक वर्ष की अवधि से अधिक समय से मूलभूत आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी कर रहे भारत के नागरिक उन देशों के सामान्य निवासी होंगे, जहां वे सामान्यत: रहते हैं। भारत की दृष्टि से वे 'अनिवासी भारतीय' (NRI_S) होंगे।

24.9 मध्यवर्ती और अंतिम वस्तुएं

राष्ट्रीय आय की अवधारणाओं और उससे जुड़े योगों को ठीक से समझ पाने के लिए मध्यवर्ती और अंतिम उत्पादों का अर्थ और उनके बीच अंतर जान लेना बहुत जरूरी है।

(i) **मध्यवर्ती वस्तुएं :** ये उन निर्मित वस्तुओं का नाम है, जिन्हें अभी आगे उत्पादन में काम लिया जाना है या जिनकी आगे बिक्री की जानी है। एक लेखा वर्ष की अवधि में उत्पादन में काम आ रही चीजें (उस वर्ष की दृष्टि से) मध्यवर्ती उत्पाद होंगी। ये गैर-टिकाऊ उत्पादक वस्तुएं और सेवाएं होती हैं, जिनका प्रयोग उत्पादक उत्पादन प्रक्रिया में करते हैं, जैसे–कच्चा माल, तेल, बिजली, कोयला, ईंधन और इंजीनियरों तथा तकनीकी कर्मचारियों की सेवाएं आदि। पुन: बिक्री के लिए खरीदकर रखी गईं वस्तुएं भी मध्यवर्ती उत्पादन ही मानी जाती हैं। कुछ उदाहरण हैं–तेल उत्पादन हेतु खरीदकर रखे गए तेल के बीज, धागा बनाने के लिए खरीदी गई कपास आदि।

(ii) **अंतिम वस्तुएं :** उपभोक्ताओं द्वारा उपभोग या उत्पादकों द्वारा निवेश के लिए खरीदे गए पदार्थों को हम अंतिम वस्तुएं मानते हैं। इनका आगे और निर्माण या पुन: विक्रय नहीं होता। उदाहरणत: उपभोक्ता द्वारा खरीदे गए डबलरोटी, मक्खन, बिस्कुट आदि।

कोई वस्तु अंतिम है या मध्यवर्ती? यह निर्णय तो उसके प्रयोग पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, एक हलवाई द्वारा प्रयुक्त दूध मध्यवर्ती माना जाएगा, जबकि किसी परिवार द्वारा इस्तेमाल किया गया दूध अंतिम वस्तु होती है।

मध्यवर्ती वस्तुओं को राष्ट्रीय आय के आकलन में शामिल नहीं किया जाता। केवल अंतिम वस्तुएं ही राष्ट्रीय आय की गणना में जोड़ी जाती हैं। इसका कारण बहुत सीधा है। मध्यवर्ती वस्तुओं का मूल्य अंतिम वस्तुओं के मूल्य में निहित होता है। यदि इनको (मध्यवर्ती) अलग से जोड़ लिया गया तो दोहरी गणना की समस्या उत्पन्न हो जाएगी।

24.10 उत्पादन का मूल्य और मूल्य वृद्धि

(i) उत्पादन का मूल्य : उत्पादक इकाइयां कच्चे माल (मध्यवर्ती वस्तुओं) तथा साधन सेवाओं (उत्पादक साधन–श्रम, भूमि, पूंजी, उद्यम) का उत्पादन के लिए प्रयोग करती हैं। विभिन्न फर्में अनेक प्रकार की चीजें बनाती हैं। इन सभी चीजों के मौद्रिक मूल्य को उत्पादन का मूल्य कहते हैं (इसका अर्थ है कि उत्पादन के मूल्य में मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्य भी शामिल हैं)।

अत:

$$\text{उत्पादन का मूल्य} = \text{मात्रा} \times \text{कीमत}$$

उत्पादक–उत्पादन को बाजार में बेचते हैं, किंतु यह आवश्यक नहीं कि किसी वर्ष के दौरान हुआ सारा उत्पादन उसी वर्ष में बिक जाए। यह अनबिका उत्पादन स्टॉक या भंडार में जुड़ जाता है। इस दृष्टि से वर्ष के दौरान भंडार में आया परिवर्तन भी उत्पादन का अंश होगा। अत: उत्पादन के मूल्य की गणना का सूत्र इस तरह बदल जाएगा–

$$\text{उत्पादन का मूल्य} = \text{बिक्री} + \text{भंडार में परिवर्तन}$$

यह तो स्पष्ट है कि उत्पादन के मूल्य में मध्यवर्ती उपभोग भी सम्मिलित है। राष्ट्रीय आय में मध्यवर्ती उपभोग व्यय को सम्मिलित नहीं किया जाता। अत: राष्ट्रीय आय की गणना में दोहरी गिनती से बचने के लिए इसे उत्पादन के मूल्य में से घटा देना चाहिए।

(ii) मूल्य वृद्धि : उत्पादन के मूल्य में मध्यवर्ती वस्तुओं के दाम घटाकर हमें मूल्य वृद्धि के आंकड़े प्राप्त होते हैं। अत: मूल्य वृद्धि उत्पादन के मूल्य और मध्यवर्ती के मूल्य का अंतर है।

$$\text{मूल्य वृद्धि} = \text{उत्पादन का मूल्य} - \text{मध्यवर्ती उपभोग व्यय}$$

उत्पादन के मूल्य और मूल्य वृद्धि की अवधारणाओं को अधिक स्पष्ट रूप से समझाने के लिए एक उदाहरण बहुत उपयोगी होगा। एक किसान अपने खेत में उत्पादित 500 रुपये की कपास कपड़ा मिल को बेचता है। मिल ने उससे 1500 रुपये का कपड़ा (300 मीटर कपड़ा 5 रुपये प्रति मीटर) बनाया। किंतु कपड़े के इस मूल्य में कपास के दाम भी सम्मिलित हैं। वह कपास मिल द्वारा इस्तेमाल किया गया मध्यवर्ती उत्पाद ही है। अत: मध्यवर्ती लागत होगी 500 रुपये इसलिए कपड़ा मिल द्वारा उत्पादन की प्रक्रिया में मूल्य वृद्धि 1000 रुपये होगी। अर्थात्

$$1500 - 500 = 1000 \text{ रुपये}$$

'सकल एवं निवल (शुद्ध) (Gross and Net) आधार पर मापन : राष्ट्रीय आय के आकलन में सकल और निवल का भेद समझना भी बहुत आवश्यक है। पिछले अनुच्छेदों में चर्चित उत्पादन के मूल्य और मूल्य वृद्धि की अवधारणाएं मूलत: 'सकल' मान हैं। बाजार में प्राप्त विक्रय मूल्य में सभी प्रकार की लागतें सम्मिलित रहती हैं। उत्पादन की प्रक्रिया में अचल पूंजीगत साधनों (मशीनों, भवनों आदि) में घिसावट होने से उनकी कीमतें कम हो जाती हैं।

इसे सामान्य घिसावट या अचल पूंजी का उपभोग कहते हैं। इसी को मूल्य ह्रास का नाम दिया जाता है। प्रत्येक उत्पादक को मूल्य ह्रास का प्रावधान रखना पड़ता है, बाजार दामों पर आकलित उत्पादन का मूल्य वस्तुतः सकल उत्पादन मूल्य होता है। इसी प्रकार मूल्य वृद्धि भी सकल मूल्य वृद्धि कहलाती है।

किंतु, जब मूल्य ह्रास के प्रावधान को उत्पादन के मूल्य एवं मूल्य वृद्धि में से घटा दिया जाता है तो हमें उनके निवल मान प्राप्त होते हैं।

निवल उत्पादन का मूल्य = सकल उत्पादन का मूल्य – मूल्य ह्रास

अतः मूल्य वृद्धि = सकल मूल्य वृद्धि – मूल्य ह्रास

24.11 बाजार कीमत और साधन लागत

ग्राहक बाजार में खरीदारी करते समय किसी वस्तु के लिए जो कीमत चुकाते हैं, वही उस वस्तु की 'बाजार कीमत' होती है। विक्रेता इस कीमत का हिस्सा अप्रत्यक्ष करों के रूप में सरकार के पास जमा कर देते हैं।

(i) अप्रत्यक्ष कर (Indirect Tax) : सरकार द्वारा वस्तुओं के उत्पादन, विक्रय और आयात पर लगाए गए उत्पादन शुल्क, विक्रय कर और सीमा शुल्क आदि कर हैं। इन करों से वस्तुओं के बाजार विक्रय मूल्य में वृद्धि हो जाती है।

(ii) आर्थिक सहायता (Subsidy) : सरकार कई बार उत्पादकों को अपने द्वारा निर्धारित कम दामों पर वस्तुएं बेचने के लिए कुछ वित्तीय सहायता देती है। यह सहायता उन्हीं वस्तुओं के लिए उत्पादकों को दी जाती है, जिनका उत्पादन सरकार बढ़ाना चाहती है। यदि ये आर्थिक सहायता अप्रत्यक्ष करों में से घटा दी जाएं तो हमें निवल अप्रत्यक्ष कर के आंकड़े प्राप्त हो जाते हैं।

(iii) निवल अप्रत्यक्ष कर (Net Indirect Tax) : यह अप्रत्यक्ष कर और आर्थिक सहायता का अंतर है।

निवल अप्रत्यक्ष कर = अप्रत्यक्ष कर – आर्थिक सहायता

बाजार कीमत पर मूल्य वृद्धि – निवल अप्रत्यक्ष कर (NIT)

= साधन लागत (FC) पर मूल्य वृद्धि अथवा

बाजार कीमत पर मूल्य वृद्धि – अप्रत्यक्ष कर + आर्थिक सहायता

= साधन लागत पर मूल्य वृद्धि

24.12 घरेलू आय बनाम राष्ट्रीय आय

देश के घरेलू क्षेत्र में सभी उत्पादक इकाइयों द्वारा की गई मूल्य वृद्धि का योग घरेलू आय कहलाता है। इन उत्पादकों को निवासी और अनिवासी वर्गों से साधन सेवाएं प्राप्त होती हैं।

टिप्पणियाँ

अत: इनके उत्पादन में से इन समूहों को साधन आय भी प्राप्त होती है। किसी देश के उत्पादन में से उसके सामान्य निवासियों का अंश (उनके द्वारा अर्जित साधन आय) का मान जानने के लिए हमें अनिवासियों का अंश घटाना पड़ेगा। इस साधन भुगतान को 'शेष विश्व को साधन भुगतान' का नाम दिया जाता है।

किंतु देश के निवासी आर्थिक क्षेत्र के साथ-साथ बाहरी, अर्थात् विश्व की उत्पादक इकाइयों की भी अपनी साधन सेवाएं प्रदान करते हैं। इससे उन्हें शेष विश्व से साधन आय प्राप्त होती है।

अत: राष्ट्रीय आय देश के सामान्य निवासियों द्वारा आर्थिक क्षेत्र के अंतर्गत एवं शेष विश्व से अर्जित साधन आयों का योग है। अर्थात्–

राष्ट्रीय आय = घरेलू आय + शेष विश्व से प्राप्त साधन आय – शेष विश्व को साधन भुगतान

शेष विश्व से प्राप्त निवल आय : यह शेष विश्व से प्राप्त और शेष विश्व को किए गए साधन भुगतानों का अंतर है।

राष्ट्रीय आय/उत्पाद = घरेलू आय/उत्पाद + शेष विश्व से प्राप्त निवल साधन आय

तद्नुसार,

(i) बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद + विदेशों से निवल साधन आय = बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद।

(ii) बाजार कीमत पर निवल घरेलू उत्पाद + विदेशों से निवल साधन आय = बाजार कीमत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद।

(iii) साधन लागत पर निवल घरेलू उत्पाद + विदेशों से निवल साधन आय = साधन लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद।

साधन लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद को ही देश की राष्ट्रीय आय कहा जाता है।

मौद्रिक और वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद

जब वस्तुओं और सेवाओं का मौद्रिक मूल्य सकल घरेलू उत्पाद में चालू कीमतों पर सम्मिलित किया जाता है तो वह चालू कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद कहलाता है, जिसे मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद भी कहा जाता है। यहां चालू कीमत का अभिप्राय उस कीमत से है, जिस वर्ष में सकल घरेलू उत्पाद का अनुमान लगाया गया है। उदाहरण के लिए, यदि हमें वर्ष 2012-13 के सकल घरेलू उत्पाद को अनुमानित करना है तो हमें 2012-13 के वर्ष की प्रचलित कीमतों का प्रयोग करना होगा, यही हमारा मौद्रिक उत्पाद होगा।

दूसरी तरफ, जब वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को आधार वर्ष की कीमतों पर परिगणित किया जाता है, उसे स्थिर कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद अथवा वास्तविक घरेलू उत्पाद का नाम दिया जाता है। सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि का अभिप्राय वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन

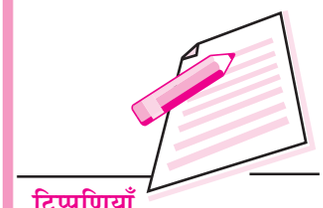

की वृद्धि से है। अत: स्थिर कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद या वास्तविक घरेलू उत्पाद का आकलन किसी अर्थव्यवस्था के आर्थिक संवर्द्धन की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करता है।

पाठगत प्रश्न 24.2

सही विकल्प चुनें

(i) राष्ट्रीय आय में 'घरेलू क्षेत्र' का अर्थ है–

(क) आर्थिक क्षेत्र

(ख) भौगोलिक क्षेत्र

(ग) निवासी

(घ) नागरिक

(ii) उत्पादन मूल्य में से मध्यवर्ती उपभोग व्यय और निवल अप्रत्यक्ष कर घटाने पर मिलता है–

(क) बाजार कीमत पर सकल मूल्य वृद्धि।

(ख) साधन लागत पर सकल मूल्य वृद्धि।

(ग) बाजार कीमत पर निवल मूल्य वृद्धि।

(घ) साधन लागत पर निवल मूल्य वृद्धि।

(iii) उत्पादक के मूल्य में से अचल पूंजी उपभोग और मध्यवर्ती लागत घटाने पर मिलता है–

(क) बाजार कीमत पर सकल मूल्य वृद्धि।

(ख) साधन लागत पर सकल मूल्य वृद्धि।

(ग) बाजार कीमत पर निवल मूल्य वृद्धि।

(घ) साधन लागत पर निवल मूल्य वृद्धि।

(iv) मूल्य वृद्धि इसके योगदान का मापक है–

(क) एक निवासी

(ख) एक उत्पादक इकाई

(ग) एक उद्यमी

(घ) एक श्रमिक

(v) किसी उत्पादक द्वारा पुन: विक्रय हेतु वस्तु और सेवाओं पर व्यय होता है–

(क) मध्यवर्ती लागत।

(ख) अंतिम उत्पादों का मूल्य।

(ग) उत्पादन का मूल्य।

(घ) साधन लागत।

टिप्पणियाँ

(vi) किसी देश की राष्ट्रीय आय इसके समान होती है–

(क) बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद

(ख) साधन लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद

(ग) साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद

(घ) बाजार कीमत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद

(vii) घरेलू आय और राष्ट्रीय आय का अंतर इसके बराबर है–

(क) निवल अप्रत्यक्ष कर

(ख) विदेशों से निवल साधन आय

(ग) मूल्य ह्रास

(घ) मध्यवर्ती उपभोग व्यय

24.9 राष्ट्रीय आय साधन आयों के योग के रूप में

उत्पादक इकाई की रचना भूमि, श्रम, पूंजी और उद्यम नामक उत्पादक साधनों के मिलने से होती है। उत्पादन की प्रक्रिया में ये आय का सृजन करते हैं। इसी सृजित आय को साधन लागत पर निवल मूल्य वृद्धि (NVA at FC) कहते हैं। यही निवल मूल्य वृद्धि उन चारों उत्पादक साधनों केबीच उनकी आमदनी या उनकी सेवाओं के प्रतिफल के रूप में निम्न प्रकार से बंट जाती है।

(क) कर्मचारियों का प्रतिफल

उत्पादन प्रक्रिया में श्रम सेवाओं के बदले मिलने वाली मौद्रिक और गैर-मौद्रिक प्राप्तियां, कर्मचारियों के प्रतिफल का अंश होती हैं। कर्मचारियों को मजदूरी और वेतन तो मिलते ही हैं, साथ ही उन्हें बोनस, भविष्य निधि में नियोक्ता का अंशदान, नि:शुल्क आवास, नि:शुल्क परिवहन, नि:शुल्क चिकित्सा सुविधाएं और नि:शुल्क अवकाश यात्रा (LTC) सुविधाएं आदि भी मिल सकती हैं।

(ख) किराया/लगान

यह वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए भवनों और मृदागत परिस्थितियों की उत्पादक सेवा प्रदान करने से प्राप्त साधन आय है।

(ग) ब्याज

उत्पादक इकाईयों को धन उपलब्ध कराने वाले ब्याज पाते हैं। हम उपभोक्ताओं को उपभोग ऋण देने से हुई प्राप्ति को साधन आय नहीं मानते।

(घ) लाभ

उद्यमी द्वारा उत्पादन इकाई को व्यवसाय की अनिश्चितताओं और जोखिमों के वहन रूपी सेवाओं के बदले मिली राशियों को लाभ कहा जाता है। निवल मूल्य वृद्धि में से कर्मचारियों के प्रतिफल, लगान और ब्याज को घटाकर बची शेष राशि को लाभ माना जाता है।

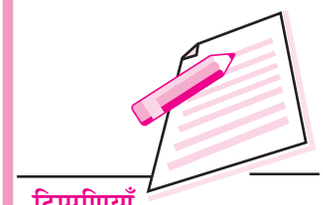

(ङ) स्वनियोजित व्यक्तियों की मिश्रित आय

यह स्वरोजगार वर्ग द्वारा सृजित आय होती है, जैसे–डॉक्टर, वकील, किसान, दुकानदार आदि की आय। एक स्वरोजगार व्यक्ति अपने व्यवसाय में अपनी संपत्ति, श्रम आदि लगाता है और वह साधन आयों का पृथक हिसाब नहीं रख पाता, जिससे उसके पृथक साधन भुगतानों की स्पष्ट पहचान नहीं हो पाती। उदाहरण के लिए, एक छोटा दुकानदार अपना व्यवसाय शुरू करता है, जिसमें वह अपना मकान, अपना श्रम व पूंजी लगाता है। अतः इस छोटे दुकानदार के द्वारा अर्जित आय स्वरोजगार की मिश्रित आय कही जाएगी।

साधन आय के योग के रूप में राष्ट्रीय आय

राष्ट्रीय आय = कर्मचारियों का पारिश्रमिक + लगान + ब्याज + लाभ + स्वरोजगार वर्ग की मिश्रित आय + शेष विश्व से प्राप्त निवल साधन आय।

अथवा,

राष्ट्रीय आय = साधन लागत पर निवल घरेलू उत्पाद + शेष विश्व से प्राप्त निवल साधन आय

24.10 राष्ट्रीय आय अंतिम व्ययों के योगफल के रूप में

उत्पादन प्रक्रिया में सृजित और विभाजित आय को साधन सेवाओं के स्वामी अंतिम उपभोग तथा निवेश पदार्थों की खरीदारी पर खर्च कर देते है। सभी उपभोक्ता पदार्थ प्रायः अंतिम वस्तुएं होती हैं। उत्पादन में काम आने वाली मशीनें, भवन आदि भी दीर्घोपयोगी चीजें हैं–इन्हें जिस उत्पादक इकाई ने खरीदकर काम में लगा लिया है–वही इनका उपयोग करती रहती है–आगे इन्हें बेचती नहीं। अतः ये भी अंतिम वस्तुएं होती हैं।

अंतिम वस्तुओं की मांग समाज के तीनों अंग करते हैं–अर्थात्, ये मांग परिवार, उत्पादक फर्में तथा सरकार द्वारा की जाती है। इनमें से परिवार निजी उपभोग और सरकार सार्वजनिक उपभोग के लिए चीजें खरीदती है। उत्पादक अर्थव्यवस्था के आर्थिक क्षेत्र के भीतर ही निवेश के उद्देश्य से खरीदारी करते हैं। अतः हम अंतिम व्यय का इस प्रकार वर्गीकरण कर सकते हैं–

(क) निजी अंतिम उपभोग व्यय

(ख) सरकारी अंतिम उपभोग व्यय

(ग) निवेश व्यय

(घ) निवल निर्यात

(क) निजी अंतिम उपभोग व्यय

परिवारों और उन्हें सेवाएं दे रहे गैर-लाभकारी संस्थानों द्वारा की गई खरीदारी निजी अंतिम उपभोग व्यय में सम्मिलित होती है। परिवार अपने सदस्यों की आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए वस्तुएं

और सेवाएं खरीदते हैं। परिवारों की सेवा कर रहे गैर-लाभकारी संस्थानों में मंदिर, गुरुद्वारे, चर्च, मस्जिद, धर्मार्थ अस्पताल आदि शामिल हैं। ये अपनी सेवाएं/सुविधाएं नि:शुल्क रूप से परिवारों को प्रदान करते हैं।

अंतिम उपभोग व्यय में परिवारों और गैर-लाभाकारी संस्थानों द्वारा इन मदों पर किए गए खर्च शामिल हैं–

(i) गैर-टिकाऊ उपभोक्ता पदार्थ : फल, सब्जियां। ये एकल उपभोग में ही प्रयुक्त हो जाते हैं।

(ii) टिकाऊ उपभोक्ता पदार्थ : फर्नीचर, कपड़े धोने की मशीन आदि। ये दीर्घकाल तक काम आते रहते हैं।

(iii) उपभोक्ता सेवाएं : शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन आदि। इनका उपभोग इनके उत्पादन के साथ ही हो जाता है।

(ख) सरकारी अंतिम उपभोग व्यय

यह सरकार द्वारा प्रदान की जा रही नि:शुल्क सेवाओं पर (सरकार द्वारा) व्यय होता है। इन सेवाओं के उदाहरण हैं–पुलिस, सैन्य सुरक्षा, शिक्षा संस्थाएं, अस्पताल, सड़कें, पुल, विधानमंडल और अन्य सरकारी विभाग।

(ग) निवेश व्यय

उत्पादक इकाईयों द्वारा लेखा वर्ष में मशीन, भवन आदि उत्पादक भौतिक परिसंपत्तियों पर व्यय को निवेश व्यय कहते हैं। निवेश (सकल घरेलू पूंजी निर्माण) के निम्न पांच प्रकार या वर्ग होते हैं।

(क) सकल व्यावसायिक अचल निवेश : यह व्यावसायिक इकाईयों द्वारा संयंत्र, मशीन आदि नई पूंजीगत परिसंपत्तियों पर किया गया व्यय है। यह दीर्घोपयोगी उत्पादक वस्तुएं हैं, इसीलिए इन पर व्यय को अचल निवेश कहते हैं। इसमें से मूल्य ह्रास घटा देने पर हमें निवल अचल निवेश के आंकड़े मिल जाते हैं।

(ख) भंडार या स्टॉक निवेश : इस वर्ग के निवेश में कच्चे माल, अर्द्धनिर्मित और निर्मित वस्तुओं के वे भंडार हैं, जो उत्पादों के बीच जमा हो जाते हैं। ये उत्पादकों द्वारा बाजार में अपने उत्पादन की आपूर्ति को सुचारू रूप से बनाए रखने के लिए आवश्यक होता है।

(ग) आवासीय निर्माण निवेश : राष्ट्रीय आय लेखांकन में आवासीय गृहों के निर्माण पर सारे व्यय को निवेश माना जाता है।

(घ) सार्वजनिक निवेश : सरकार द्वारा सड़कों, अस्पतालों, स्कूलों आदि के निर्माण पर व्यय (सरकार का) सार्वजनिक निवेश कहलाता है।

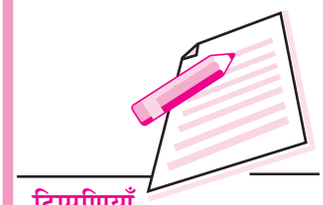

(ङ) निवल निर्यात : निर्यात से तात्पर्य घरेलू क्षेत्र में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की खरीद पर विदेशियों का व्यय और आयात से तात्पर्य विदेशी वस्तुओं और सेवाओं पर हमारा व्यय। यह निर्यात और आयात का अंतर होता है।

पाठगत प्रश्न 24.3

सही विकल्प चुनें

(i) यह कर्मचारियों का पारिश्रमिक नहीं माना जा सकता–
- (क) वेतन का भुगतान
- (ख) बोनस का भुगतान
- (ग) व्यावसायिक यात्रा भत्ते का भुगतान
- (घ) नि:शुल्क आवास

(ii) राष्ट्रीय आय अनुमानों की लगान राशि इस कार्य के निमित्त दी जाती है–
- (क) उत्पादन हेतु भूमि का प्रयोग
- (ख) उत्पादन के लिए भूमि पर निर्माण
- (ग) उत्पादन में प्रयुक्त भूमि और भवन
- (घ) निवास हेतु प्रयुक्त भूमि और निर्माण

(iii) बाजार कीमत पर सकल मूल्य वृद्धि का बाजार कीमत पर निवल मूल्य वृद्धि पर आधिक्य कितने के बराबर होता है–
- (क) अप्रत्यक्ष कर के
- (ख) आर्थिक सहायता के
- (ग) अचल पूंजी उपभोग के
- (घ) विदेशों से निवल साधन आय के

(iv) राष्ट्रीय आय का घरेलू आय पर आधिक्य बराबर होता है–
- (क) निर्यात के
- (ख) विदेशों से प्राप्त साधन आय का विदेशों को भुगतान की गई साधन पर आधिक्य के
- (ग) विदेशों से प्राप्त साधन आय के
- (घ) आयात के

(v) अंतिम व्यय इस पर व्यय है–
- (क) केवल उपभोग पर
- (ख) केवल निवेश पर
- (ग) उपभोग और निवेश पर
- (घ) उपभोग और निवेशी किसी पर भी नहीं

(vi) बाजार कीमत पर घरेलू उत्पाद साधन लागत पर घरेलू उत्पाद से इतना अधिक होता है–

(क) विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय

(ख) अचल पूंजी निवेश

(ग) निवल अप्रत्यक्ष कर

(घ) निर्यात

24.11 राष्ट्रीय आय और इसके घटक योग

राष्ट्रीय आय से संबंधित अवधारणाओं को समझने के बाद आप राष्ट्रीय का अर्थ और इसके संबंधित समुच्चों को आसानी से समझ पाएंगे। राष्ट्रीय आय के संबंधित समुच्चय हैं–

(i) GDP_{MP} : बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product at Market Price)

(ii) GDP_{FC} : साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product at Factor Cost)

(iii) NDP_{MP} : बाजार कीमत पर निवल घरेलू उत्पाद (Net Domestic Product at Market Price)

(iv) NDP_{FC} : साधन लागत पर निवल घरेलू उत्पाद (Net Domestic Product and Factor Cost)

(v) NNP_{FC} : साधन लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product at Factor Cost)

(vi) GNP_{FC} : साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product and Factor Cost)

(vii) NNP_{MP} : बाजार कीमत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product at Market Price)

(viii) GNP_{MP} : बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product Market Price)

(i) बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद : एक लेखा वर्ष में देश के घरेलू क्षेत्र में उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मौद्रिक मूल्य है।

$GDP_{MP} = NDP_{FC}$ + मूल्य ह्रास + निवल अप्रत्यक्ष कर

(ii) साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद : देश के घरेलू क्षेत्र के वस्तुओं और सेवाओं के अंतिम उत्पादन का मूल्य, जिसमें निवल अप्रत्यक्ष कर नहीं होते।

$GDP_{FC} = GDP_{MP}$ – अप्रत्यक्ष कर + आर्थिक सहायता

और $GDP_{FC} = GDP_{MP} - NIT$

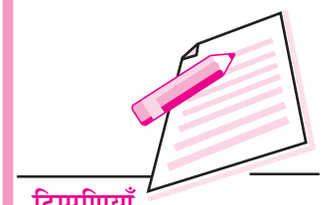

(iii) बाजार कीमत पर निवल घरेलू उत्पाद : देश के घरेलू क्षेत्र का वस्तुओं और सेवाओं के अंतिम उत्पादन का मौद्रिक मान मूल्य ह्रास को छोड़कर।

$NDP_{MP} = GDP_{MP}$ – मूल्य ह्रास

(iv) साधन लागत पर निवल घरेलू उत्पाद : मूल्य ह्रास और निवल अप्रत्यक्ष कर रहित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मौद्रिक मूल्य।

$NDP_{FC} = GDP_{MP}$ – मूल्य ह्रास – अप्रत्यक्ष कर + आर्थिक सहायता

(v) साधन कीमत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद (राष्ट्रीय आय) : देश के सामान्य निवासियों द्वारा एक लेखा वर्ष में कमाई गई साधन आय (कर्मचारियों के पारिश्रमिक + लगान + ब्याज + लाभ)।

अथवा

$NNP_{FC} = NDP_{FC}$ + सामान्य निवासियों द्वारा विदेशों से प्राप्त साधन आय – विदेशों को किए गए साधन आय भुगतान।

(vi) साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद : एक लेखा वर्ष में देश के सामान्य निवासियों द्वारा अर्जित साधन आयों का योगफल इसमें मूल्य ह्रास प्रावधान की राशि भी सम्मिलित रहती है।

$GNP_{FC} = NNP_{FC}$ + मूल्य ह्रास

(vii) बाजार कीमत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद : एक लेखा वर्ष में अप्रत्यक्ष कर सहित एक लेखा वर्ष में सामान्य निवासियों द्वारा अर्जित साधन आयों का योगफल।

$NNP_{MP} = NNP_{FC}$ + अप्रत्यक्ष कर – आर्थिक सहायता

(viii) बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद : मूल्य ह्रास और निवल अप्रत्यक्ष करों सहित एक लेखा वर्ष भर में सामान्य निवासियों द्वारा अर्जित साधन आयों का योग

$GNP_{MP} = NNP_{FC} + Dep + NIT$

पाठगत प्रश्न 24.4

निम्न संकेत शब्दों/वाक्यांशों का प्रयोग कर रिक्त स्थान भरें–

निवल, अप्रत्यक्ष कर, आर्थिक सहायता, मूल्य ह्रास, निवासियों द्वारा शेष विश्व से अर्जित साधन आय।

(i) $GDP_{MP} = NVA_{FC}$ + मूल्य ह्रास + ...

(ii) $NDP_{MP} = GDP_{MP}$ – .....

(iii) $NNP_{FC} = NDP_{FC}$ + ... – विदेशों को साधन भुगतान।

(iv) $GDP_{FC} = GDP_{MP}$ – अप्रत्यक्ष कर + ...

(v) $NDP_{FC} = GDP_{MP}$ – मूल्य ह्रास – .....

आपने क्या सीखा

- 'घरेलू आय' में प्रयुक्त शब्द घरेलू का अभिप्राय देश के आर्थिक क्षेत्र से है।
- उत्पादकों द्वारा अन्य उत्पादकों से खरीदी गई चीजें, जिन्हें वे अपने उत्पादन कार्य में उपभोग करते हैं अथवा आगे बेच देते हैं, 'मध्यवर्ती' वस्तुएं कहलाती हैं। अंतिम वस्तुएं वे होती हैं, जिन्हें अंतिम उपभोग और निवेश के लिए प्राप्त किया जाता है।
- उत्पादन की प्रक्रिया में सृजित आय को साधन लागत पर निवल मूल्य वृद्धि कहते हैं।
- उत्पादन के मूल्य का मध्यवर्ती उपभोग पर आधिक्य ही मूल्य वृद्धि है।
- सकल की अवधारणा में मूल्य ह्रास शामिल हैं, जबकि निवल की अवधारणा में यह शामिल नहीं करते।
- GVA at MP = उत्पादन का मूल्य – मध्यवर्ती उपभोग।
- निवल अप्रत्यक्ष कर = अप्रत्यक्ष कर – आर्थिक सहायता
- NVA at MP = GVA at MP – अचल पूंजी का उपभोग
- NVA at FC = NVA at MP – अप्रत्यक्ष कर + आर्थिक सहायता
- देश का आर्थिक क्षेत्र उसके भौगोलिक क्षेत्र से कुछ अलग होता है।
- देश की आर्थिक सीमा में स्थित सभी उत्पादक इकाइयों द्वारा की गई मूल्य वृद्धि का योग ही घरेलू उत्पाद है।
- घरेलू उत्पाद + विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय = राष्ट्रीय उत्पाद।
- साधन लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद ही राष्ट्रीय आय है।
- निवासी की अवधारणा 'नागरिक' से अलग होती है।
- साधन आय है–श्रम के बदले कर्मचारियों का पारिश्रमिक, भूमि का भाड़ा, पूंजी के स्वामियों को ब्याज और उद्यमियों को लाभ। मिश्रित आय साधन आयों का मिश्रण है, जिसे विभिन्न साधन आयों में विभाजित करना कठिन है।

पाठांत प्रश्न

1. आर्थिक क्षेत्र की अवधारणा समझाइए।
2. 'निवासी' का अर्थ समझाइए।
3. 'मध्यवर्ती' और 'अंतिम' उत्पादनों में भेद करें। इस अंतर का महत्व भी समझाइए।
4. एक संख्यात्मक उदाहरण का प्रयोग कर मूल्य वृद्धि की अवधारणा समझाइए।

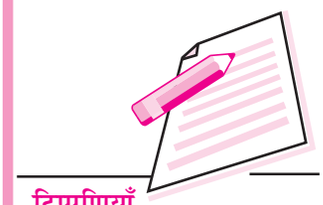

5. निम्न जानकारियां दी गई हैं–

   (क) उत्पादन का मूल्य

   (ख) अप्रत्यक्ष कर

   (ग) मध्यवर्ती लागत

   (घ) अचल पूंजी उपभोग

   (ङ) आर्थिक सहायता

   उपर्युक्त जानकारी के आधार पर मूल्य वृद्धि के ये मान ज्ञात करें–

   (i) GVA at MP

   (ii) GVA at FC

   (iii) NVA at MP

   (iv) NVA at FC

6. विभिन्न साधन आयों के नाम लिखें। संक्षेप में उनके अर्थ समझाइए।
7. मिश्रित आय क्या है? ऐसी अवधारणा की आवश्यकता क्यों पड़ जाती है?
8. अंतिम व्यय के विभिन्न प्रकार बताइए। संक्षेप में इनके अर्थ भी समझाइए।
9. राष्ट्रीय आय से संबंधित योगों के नाम बताइए।
10. दो क्षेत्र वाली अर्थव्यवस्था में आय के चक्रीय प्रवाह को समझाइए।
11. तीनी मूल आर्थिक क्रियाओं के बीच संबंध बताइए।
12. मध्यवर्ती और अंतिम वस्तुओं में अंतर कीजिए।
13. अंतरण भुगतान क्या हैं? ये किस प्रकार साधन भुगतान से भिन्न होते हैं?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

24.1

(i) कर्मचारिों का पारिश्रमिक, लगान, ब्याज और लाभ

(ii) 24.1(ख) को पढ़ें

(iii) 24.3 को पढ़ें

(iv) 24.4 को पढ़ें

24.2

(i) (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (iv) (ख) (v) (क)

(vi) (ख) (vii) (ख)

24.3

(i) ग (ii) ग (iii) ग (iv) ख (v) ग (vi) ग

24.4

(i) निवल अप्रत्यक्ष कर (ii) मूल्य ह्रास (iii) शेष विश्व से प्राप्त साधन आय

(iv) आर्थिक सहायताएं (v) निवल अप्रत्यक्ष कर

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

1. भौगोलिक क्षेत्र में अपने देश के दूतावास आदि को जोड़ने तथा अपने देश में स्थित विदेशी दूतावास अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठानों को छोड़कर आर्थिक क्षेत्र का निर्धारण होता है।

2. (क) वे व्यक्ति/प्रतिष्ठान जिनके आर्थिक हित उस देश में निहित हों, जिस देश में वे रहते हों।

   (ख) निवासी का विचार नागरिक से भिन्न है।

3. (क) पुनः विक्रय या आगे उत्पादन हेतु खरीदी गई चीजें मध्यवर्ती उत्पाद है।

   (ख) उपभोग या निवेश हेतु खरीदी गई चीजें अंतिम उत्पाद हैं।

   (ग) मध्यवर्ती और अंतिम का भेद दोहरी गणना के निवारण के लिए जरूरी है।

4. उत्पादन के मूल्य की मध्यवर्ती लागत से अधिकता ही मूल्य वृद्धि है।

   उदाहरण : उत्पादक का मूल्य = 2000 रुपये

   मध्यवर्ती उपभोग व्यय = 500 रुपये

   मूल्य वृद्धि = V.O – IC

   = 2000 – 500 रुपये

   = 1500 रुपये

5. GVA at MP = उत्पादन का मूल्य – मध्यवर्ती लागत

   GVA at FC = GVA at MP – अप्रत्यक्ष कर + आर्थिक सहायता

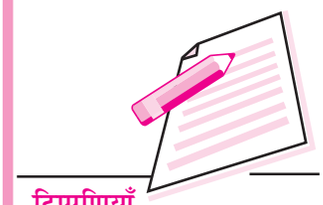

NVA at MP = GVA at MP – अचल पूजी का उपभोग

NVA at FC = GVA at MP – अप्रत्यक्ष कर + आर्थिक सहायता – मूल्य ह्रास

6. (क) साधन आय हैं : (i) कर्मचारियों का पारिश्रमिक (ii) लगान या परिचालन अधिशेष ब्याज और लाभ (iii) स्वनियोजितों की मिश्रित आय

(ख) प्रत्येक का अर्थ

7. (क) मिश्रित आय स्वरोजगारों की आय है।

इसे एक अलग आय वर्ग माना जाता है। इसका घटक साधन प्रतिफलों में विभाजन संभव नहीं होता।

8. (क) अंतिम व्यय है : (i) निजी अंतिम उपभोग व्यय (ii) सरकारी अंतिम उपभोग व्यय (iii) सकल घरेलू पूंजी निर्माण और (iv) शुद्ध निर्यात

(ख) प्रत्येक का कार्य

9. (i) GDP_{MP} (ii) GDP_{FC} (iii) NDP_{MP} (iv) NDP_{FC}

(v) NNP_{FC} (National Income) (vi) GNP_{FC} (vii) NNP_{MP} (viii) GNP_{MP}